मेवाती

भारत की गौरवशाली देशी गोवंशीय विरासत

प्रस्तावना

भारत की धरती पर गोवंश की अनेक विशिष्ट नस्लों ने सदियों से अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके इतिहास, उत्पत्ति, स्वरूप, गुण और उपयोग का विवरण पुरानी पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों, सर्वेक्षणों तथा अन्य ऐतिहासिक स्रोतों में बिखरा हुआ है।

यह संकलन उसी प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री को एक स्थान पर प्रस्तुत करने और हिंदी पाठकों के लिए सरल एवं सुगम बनाने का प्रयास है। इसमें भारतीय गोवंश के इतिहास, पहचान और विशेषताओं से संबंधित जानकारी को मूल स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

यह संकलन किसी नस्ल का आधुनिक वैज्ञानिक मूल्यांकन नहीं, बल्कि ऐतिहासिक स्रोतों में दर्ज उसके स्वरूप, विशेषताओं और इतिहास को आज के पाठक तक पहुँचाने का एक विनम्र प्रयास है।

॥ मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ॥

मूल स्रोत
पुस्तक: Indigenous Breeds of Cattle in Rajputana
लेखक: Major F. S. H. Baldrey
प्रकाशन वर्ष: 1911

पुस्तक की ऑनलाइन PDF प्रति: | www.surbhisewa.com

अनुवाद संबंधी सूचना

यह हिंदी पाठक संस्करण कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की सहायता से तैयार किया गया है। किसी तथ्य अथवा अनुवाद में अंतर पाए जाने पर संबंधित मूल पुस्तक को ही अंतिम और प्रमाणिक स्रोत माना जाए।

मेवाती गोवंश

मूल स्रोत: मेजर एफ. एस. एच. बाल्ड्रे, द इंडिजिनस ब्रीड्स ऑफ कैटल इन राजपूताना, 1911

क्षेत्र और राठ से निकटता

मेवाती नस्ल मेवात कहलाने वाले क्षेत्र में विशेष महत्व रखती थी, जिसका केंद्र लेखक ने अलवर को माना है। इसके पालन-पोषण और प्रजनन के सामान्य सिद्धांत राठ नस्ल जैसे ही बताए गए हैं, जो इसके निकटवर्ती क्षेत्र में पाई जाती थी और स्वरूप में भी इससे बहुत मिलती-जुलती थी। मेवाती पशुओं की बड़ी संख्या रेवाड़ी और पुष्कर के मेलों में बेची जाती थी और वहाँ उन्हें अच्छी कीमत मिलती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 24 | पीडीएफ पृ. 38.

स्वभाव और उपयोगिता

मेवाती बैल राठ और नागौरी की तुलना में धीमी चाल और अधिक शांत, भारी स्वभाव वाला बताया गया है। इसी कारण कुछ कृषक इसे अधिक पसंद करते थे, क्योंकि इसे अपेक्षाकृत कम चारे पर रखा जा सकता था और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी यह राठ या नागौरी की तुलना में कम दुबला पड़ता था।

यह आकार में छोटा और शक्ति में कुछ कम था, इसलिए अपने ही गहरे रेतीले क्षेत्र में नागौरी या राठ जितना भारी काम नहीं कर सकता था। फिर भी लेखक इसे निस्संदेह उपयोगी पशु मानता है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 24 | पीडीएफ पृ. 38.

लेखक द्वारा देखे गए सांड का व्यवहार

पुस्तक में दिए चित्र के बारे में लेखक लिखता है कि यद्यपि वह कलात्मक दृष्टि से बहुत सफल नहीं था, फिर भी उसमें पशु के प्रमुख लक्षण अच्छी तरह दिखाई देते हैं। चित्रित सांड के पास जाना बहुत कठिन था और उसे हाथ से पकड़ना संभव नहीं हुआ।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 24 | पीडीएफ पृ. 38.

मेवाती बैल का सामान्य स्वरूप

मेवाती बैल छोटा, मजबूत, धीमी चाल वाला और शांत-भारी स्वभाव का बताया गया है। कृषक उसे इसलिए महत्व देते थे कि वह अच्छा काम करता था और बड़े पशुओं की तुलना में कम चारे की आवश्यकता रखता था।

बेहतर श्रेणी के पशु अच्छे परिवहन-बैल बनते थे और लेखक के अनुसार उनमें से कुछ तोपखाना अथवा भारी सैन्य कार्य के लिए भी उपयोगी हो सकते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 24 | पीडीएफ पृ. 38.

वितरण और भू-स्वरूप

मेवाती नस्ल अलवर के पूर्व और उत्तर के क्षेत्रों तथा भरतपुर के पश्चिमी भागों में पाई जाती थी। क्षेत्र चट्टानी और रेतीला था तथा अरावली की निचली पहाड़ियों से कटा हुआ था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 24 | पीडीएफ पृ. 38.

सिर, माथा, आँख, थूथन और सींग

चेहरा छोटा और माथा चौड़ा है। आँखें उभरी हुई हैं और उनके चारों ओर काली किनारी रहती है, जो नागौरी की अपेक्षा अधिक स्पष्ट बताई गई है। थूथन चौड़ा और चौकोर है। ऊपरी होंठ मोटा और कुछ बाहर की ओर लटकता हुआ है, जिससे नाक का ऊपरी भाग संकुचित दिखाई देता है। सींग आधार पर मोटे हैं और ऊपर, बाहर तथा फिर भीतर की ओर मुड़ते हुए अचानक नुकीले सिरे पर समाप्त होते हैं। नागौरी की तरह पीछे की ओर मुड़ने की प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिए। कान कुछ छोटे और लटकते हुए हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 24 | पीडीएफ पृ. 38.

मेवाती गाय (Mewati Cow)

सोत: मेजर एफ. एस. एच. बाल्ड्रे, राजपूताना के स्वदेशी गोवंश, 1911

(Plate XI)

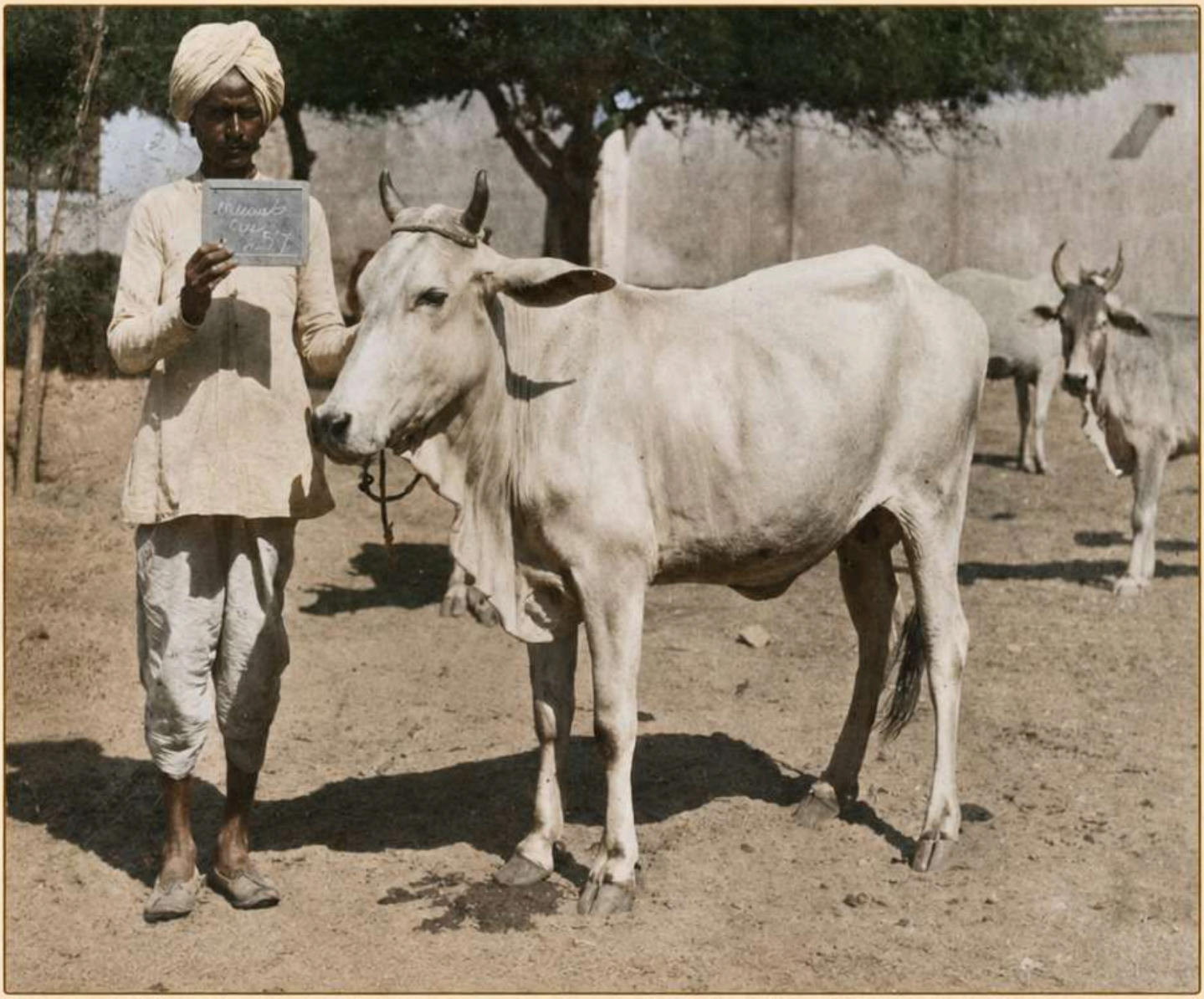

स्थान: अलवर से चार मील दूर एक गाँव

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

मेवाती सांड (Mewati Bull)

सोत: मेजर एफ. एस. एच. बाल्ड्रे, राजपूताना के स्वदेशी गोवंश, 1911

(Plate XII)

स्थान: अलवर के पास एक गाँव

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

गर्दन, कुकुद, कंधे, पैर और खुर

गर्दन पर्याप्त लंबी, कुकुद छोटा और कंधे छोटे बताए गए हैं, जिससे सामने का भाग कुछ ऊँचा उठा हुआ दिखाई देता है। गलकम्बल छोटा है। पैर छोटे हैं और छाती का घेरा नागौरी बैल की तुलना में कम गहरा है।

पीठ लंबी है और पिछला भाग पर्याप्त सीधा है। पूँछ अपेक्षाकृत अच्छी तरह लगी हुई, लंबी और मोटी है; वह एड़ी तक पहुँचती है और अंत में मोटे काले बालों के गुच्छे पर समाप्त होती है।

पिछली जाँघें मजबूत और चौड़ी हैं। पिछले जोड़ कुछ मुड़े हुए हैं और खुर बड़े तथा फैलाव वाले हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 24–25 | पीडीएफ पृ. 38, 41.

मेवाती सांड

सांड का सिर छोटा, माथा समतल और थोड़ा अवतल है। नासाछिद्र छोटे हैं और ऊपरी होंठ चौड़ा लेकिन चलायमान है। सींग छोटे और आधार पर मोटे हैं तथा ऊपर और बाहर की ओर मुड़ते हैं।

कान लंबे और लटकते हुए हैं। गर्दन लंबी है। गलकम्बल और कुकुद दोनों अच्छी तरह विकसित हैं। पीठ लंबी और कूल्हे का पिछला भाग बहुत छोटा है। पूँछ लंबी है और टखने के पास मोटे काले बालों के गुच्छे में समाप्त होती है।

कंधे छोटे, छाती गहरी, पसलियाँ कुछ सपाट, पैर छोटे और शक्तिशाली, खुर चौड़े और फैलाव वाले तथा लिंगावरण छोटा बताया गया है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 25 | पीडीएफ पृ. 41.

मेवाती गाय

गायें बैलों की तुलना में बहुत छोटी होती हैं। उनके पैर महीन और गोल, लगभग हिरन जैसे बताए गए हैं। वे बहुत सक्रिय और कुछ जंगली स्वभाव की होती थीं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 25 | पीडीएफ पृ. 41.

1911 में दर्ज कीमतें

श्रेणी	दर्ज कीमत
गाय	₹25–₹40
1 वर्ष का प्रजनन हेतु चुना सांड-बछड़ा	₹30–₹40

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 25 | पीडीएफ पृ. 41.

कार्य-क्षमता

मेवाती बैल गाड़ी, हल और कुएँ के काम में लगाए जाते थे। वे प्रतिदिन लगभग 10 घंटे काम कर सकते थे। अच्छी जोड़ी लगभग 15 मन (लगभग 560 किलोग्राम, तत्कालीन ब्रिटिश-भारतीय मानक के आधार पर) भार को 12 मील (लगभग 19.3 किमी) तक खींच सकती थी। हल्की गाड़ी के साथ वे लगभग 20 मील (लगभग 32.2 किमी) प्रतिदिन चल सकते थे। उनकी औसत चाल लगभग 3 मील प्रति घंटा (लगभग 4.8 किमी/घंटा) बताई गई है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 25 | पीडीएफ पृ. 41.

आहार

मेवाती पशुओं का आहार राठ नस्ल के समान बताया गया है। मूल स्रोत इस स्थान पर अलग विस्तृत राशन नहीं दोहराता।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 25 | पीडीएफ पृ. 41.

मेवाती बैल (Mewati Bullock)

सोत: मेजर एफ. एस. एच. बाल्ड्रे, राजपूताना के स्वदेशी गोवंश, 1911

(Plate XIII)

स्थान: अलवर के पास

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

गाँव की प्रजनन व्यवस्था

प्रत्येक गाँव में एक सांड रखा जाता था और कृषक अच्छे सांड के चयन में विशेष सावधानी रखते थे। सांड और गाय का अनुपात राठ और नागौरी के समान बताया गया है।

बहुत छोटे बछड़े को भी गाय का पूरा दूध नहीं दिया जाता था और बछिया को सांड-बछड़े की तुलना में हमेशा कम भोजन दिया जाता था। लेखक लिखता है कि यह व्यवस्था पूरे क्षेत्र में सामान्य दिखाई देती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 25–26 | पीडीएफ पृ. 41–42.

बधियाकरण

बधियाकरण लगभग 2½–3 वर्ष की आयु में मसलने की पद्धति से किया जाता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 26 | पीडीएफ पृ. 42.

रोग

सामान्य रोगों में रिंडरपेस्ट, खुरपका-मुँहपका और एन्थ्रैक्स का उल्लेख है। मूल स्रोत इनमें स्थानीय नाम भी देता है—रिंडरपेस्ट के लिए 'डिक्क', खुरपका-मुँहपका के लिए 'बांग' और एन्थ्रैक्स के लिए 'केटली'।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 26 | पीडीएफ पृ. 42.

रंग और दूध

प्रमुख रंग सफेद बताया गया है। गायों को विशेष रूप से दूध के लिए नहीं रखा जाता था और सामान्य दूध-उत्पादन लगभग 5 सेर प्रतिदिन (लगभग 4.7 किलोग्राम, तत्कालीन ब्रिटिश-भारतीय मानक के आधार पर) बताया गया है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 26 | पीडीएफ पृ. 42.

मेवात गोवंश की मूल माप-तालिका

मूल रिपोर्ट के सभी माप इंच में दिए गए हैं। जहाँ रंग के स्थान पर मूल तालिका में केवल पुनरावृत्ति-चिह्न है, वही पूर्ववर्ती रंग लागू होता है।

पशु	ऊँचाई	शरीर लंबाई	छाती घेरा	पिंडली घेरा	पिंडली लंबाई	सींग	चेहरा	माथा	आयु	रंग
मेवात बैल 23	56	54	69	7½	6½	14	21	7	6	सफेद
मेवात बैल 24	54	57	66	6½	7	10	21	8	8	सफेद
बछड़ा 25	50½	54	59	6½	7	4	17	7	2	सफेद
गाय 35	48	48	60	5½	6½	9	18	6	5	सफेद
गाय 37	49	46	58	7	6½	6	19	6½	7	सफेद
सांड 36	61	69	74	8½	7½	10½	22	6½	7	स्लेटी
मेवात भैंसा 38	49½	51	77	8	5½	17	17	8½	8	—
मेवात भैंसा 39	50	50	71½	8¾	5	18½	18	9	7	—

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 27 | पीडीएफ पृ. 44.

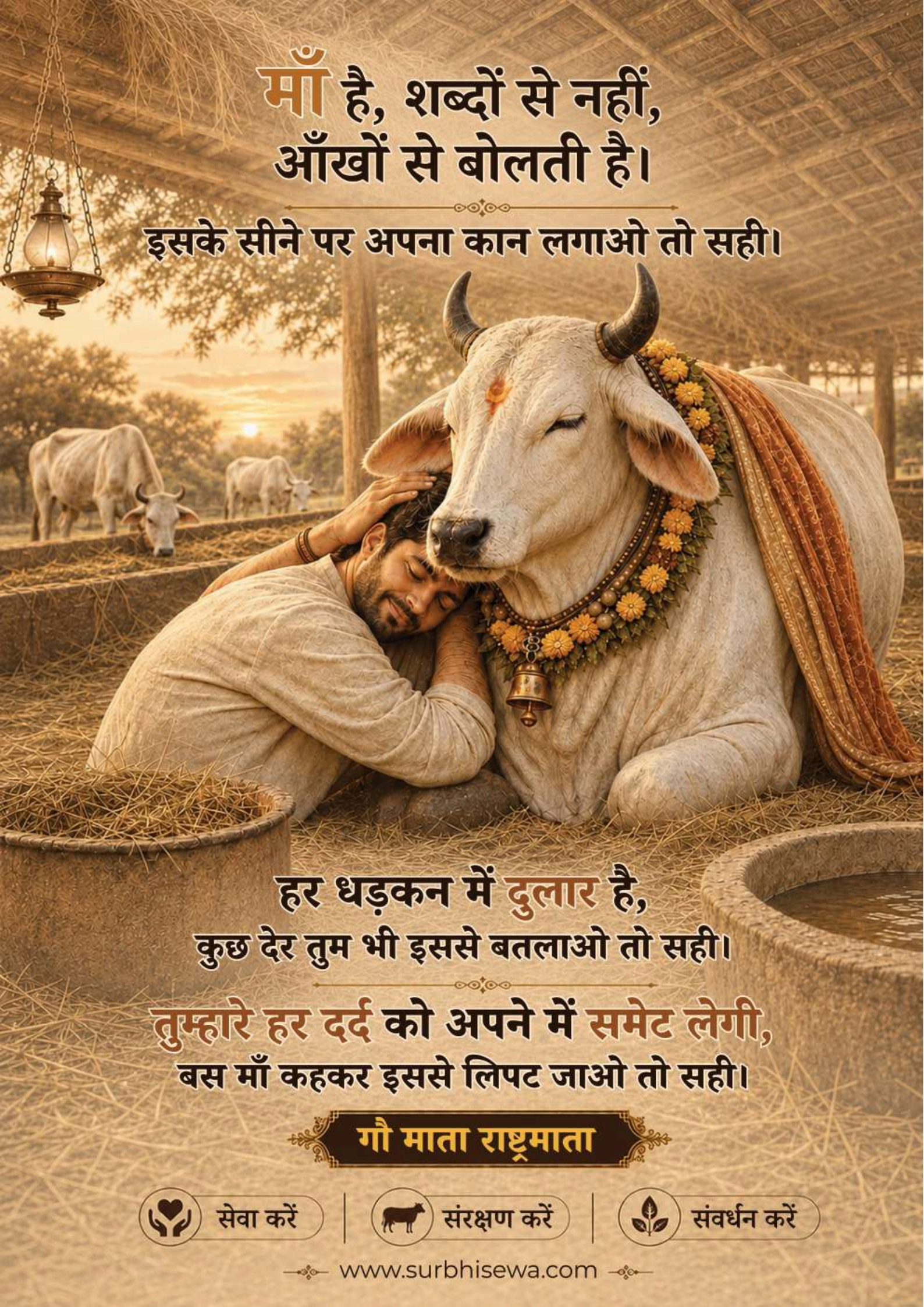
माँ है, शब्दों से नहीं,
आँखों से बोलती है।
इसके सीने पर अपना कान लगाओ तो सही।
हर धड़कन में दुलार है,
कुछ देर तुम भी इससे बतलाओ तो सही।
तुम्हारे हर दर्द को अपने में समेट लेगी,
बस माँ कहकर इससे लिपट जाओ तो सही।
गौ माता राष्ट्रमाता
सेवा करें
संरक्षण करें
संवर्धन करें
www.surbhisewa.com